



न कानून, ना कायदा ... जी हुजूरी में फायदा ही फायदा... !

देखते-देखते अफज़ल रिटायर हो गये। लेकिन विरासत में एक बात अपने वारिस चमचे को सिखा गये कि-‘न कानून ना कायदा, जी हुजूरी में फायदा ही फायदा...!’।

दिनों-दिन मिसेज़ खान की उदासी बढ़ती जा रही थी। लाख कोशिश करती, अपने मन को समझाने की कि ‘ये दिन तो आना ही था’ पर दिल मानने को तैयार नहीं था। क्या करे, इस कमबख्त दिल का ? उस दिन पड़ोसन लवली की मम्मी मिसेज़ चाँदवानी आयी थी। ढेर सारी धार्मिक बातें बताकर गयी थीं। गीता का सार समझाकर गयी थी, कि ‘जो जन्मा है उसकी मृत्यु अवश्य होती है’ वैसे ही जो सरकारी सेवा में है वो रिटायर अवश्य होगा। इस शाश्वत सच को हमेशा याद रखो, कभी भूलो मत। फिर बहुत देर तक मिसेज़ खान के आँसू पोछती रही। बड़ी मुश्किल से मिसेज़ खान ने जैसे-तैसे एक रोटी शाही चिकन के साथ निगली और जैसे ही अपने बिस्तर पर गयी, फिर फूट-फूट कर रोने लगी। इतने में मिसेज़ खान की बेटी निगार आ गयी थी। अम्मी को रोता देख वह भी उदास हो गयी और अम्मी का सिर दबाने लगी। न जाने कब मिसेज़ खान नींद के आगोश में चली गयी।

कॉल बेल की मधुर आवाज़ के साथ ही मिसेज़ खान ने दौड़ लगा दी। मुख्य दरवाज़े पर देखा, तो बड़े साहब का चपरासी मंगल खड़ा था। हाथ में एक बड़ी थैली थी। आगे बढ़ता हुआ बोला-बड़े साहब ने भिजवायी है, पाँच किलो है।

मिसेज़ खान थैली हाथ में लेते ही भाँप गयी कि शानदार मीट है। थैक्यू-थैक्यू कहती हुई वह अंदर चली गयी। कुछ समय बाद पूरा घर खुशबू से भर गया। नौकरानी श्यामा की मदद से मीट साफ़ किया जाने लगा। शानदार मीट बिरयानी की तैयारी होने लगी थी।

अरे, डार्लिंग क्या बन रहा है? मि. अफज़ल खान ने घर में कदम रखते ही पूछ लिया था। हाथ में मिठाई के पैकेट टेबल पर रखते हुए वे सोफे पर पसर से गये थे। वाह ! मिठाइयाँ, मिसेज़ खान ने कहा।

अरी, साली एक फाइल ऐसी बड़े साहब के अटकी थी कि चार पाँच-महीने से साहब कुछ कर नहीं रहे थे। अफज़ल खान ने अपनी वीरता की बात बतायी।

फिर क्या किया आपने ? मिसेज़ खान ने रिश्तवत से

खायी गयी ढेर सारी मिठाइयों की मीठी मुस्कान फेंकी।

अंग-अंग में चापलूसी का रंग भरते हुए अफज़ल खान दोहरे से हो गये फिर शहद घोलकर बोले-फिर क्या था जानम ? पचास हजार में तोड़ा उसे। एक लाख साला क्या देता कान्ट्रेक्टर ? मैंने सोचा पचास हजार ही सही। दस हजार में साहब को विदेश से मंगायी जॉनी वॉकर की बॉटल के साथ मजे करवाये और फाइल भी निकलवा ली। मिसेज़ खान फिदा हो चुकी थी अपने तिकड़मबाज पति पर। उसके बाद तो दिन में शानदार बिरयानी के साथ विदेशी स्कॉच के पटियाला पैग खाली किये अफज़ल ने और चादर तानकर सो गये।

ऑफिस के ट्रान्सफरों का मौसम भी चल रहा था। न जाने कितने आये और चले गये, एक सेक्शन से दूसरे सेक्शन, एक मण्डल से दूसरे मण्डल, कहाँ रिटायर होने जा रहे थे। उनको ‘बड़े साहब’ ने वहीं का वहीं रहने दिया। ईमानदारी का सदियों पुराना भूत चिपका था उनसे, इसलिए ऐसे अकड़ू बाबुओं और छोटे-मोटे अफसरों का तो तिया-पाँचा करना ही था। क्योंकि ऐसे लोगों पर यदि अंकुश नहीं डाला गया, तो अकड़ू बनी रहती है इनकी। चक्कर ये पड़ता है कि ट्रान्सफर होने और सेक्शन बदलने से भी ये सुधरते नहीं हैं। नस-नस में इनकी ईमानदारी खून बनकर दौड़ती है। बड़े ही दुःखदायी जीव होते हैं ये। अफज़ल जैसे लोगों को कोई ‘टच’ तो कर ले, क्या मज़ाल कि आप इनका सेक्शन भी बदल दें। ‘बड़े साहब’ के इशारे के बिना इनको आप हिला नहीं सकते। अफज़ल जैसे लोगों की क्या तारीफ करें ? जैसे राजा के दरबार में स्तुति करने वाले होते थे, वैसे ही ये भी हैं ‘तेरी भी जय, उसकी भी जय’ जो कुर्सी पर बैठ बस उसकी जय, कुर्सी से उतरा तो अनजान बन गये। साहब, यूनिशन वाले भी इनका कुछ नहीं कर पाते, सबको पता है कर्मचारियों के संगठन कैसे काम करते हैं ? पर इन चमचों पर तो इनका भी बस नहीं चलता, इसलिए ये संगठन भी आँखें बंद करके इनके नखरें उठाते हैं, क्यों कि इन संगठनों में भी चमचावाद ने पैर पसार रखे हैं। पता है सबको संगठन का सर्वे-सर्वा

एक ही व्यक्ति है, वो है त्रिवेदी बाकी सब छोटे-मोटे संगठन के पदाधिकारी सिर्फ ‘रबर स्टाम्प’ हैं, जिनको वो नचाता रहता है। क्या करें साब, चमचावाद फैला ही इतनी दूर-दूर तक है।

हम तो हमारे अफज़ल जी की ही बात करेंगे। शाम को चाँदी के कप में भुने काजू और चाय की प्याली के साथ अफज़ल की बेगम ने जब उनको जगाया, तो बिरयानी का स्वाद विदेशी शराब की खुमारी आँखों में भरकर अफज़ल ने मदमस्त अंदाज़ में बेगम को देखा। बेगम शरमा गयी, लेकिन अचानक ही अफज़ल घबरा गये, गुस्से से लाल-पीले होकर चिल्लाते हुए बोले-क्या उठा नहीं सकती थी ? बेगम भी घबरा गयी-बोली क्या हुआ ? क्या हुआ तेरा सिर ? अफज़ल बोले-मैडम को मॉल ले जाना है, शॉपिंग करनी है उनको लेकिन-बेगम बोली-लेकिन-वेकिन कुछ नहीं साहब को बस एक ही व्यक्ति पर भरोसा है और वो है तुम्हारा शौहर। समझी। अफज़ल जी तैयार होकर ‘मैडम जी’ को मॉल घुमाने चल दिये। अफज़ल जैसे ही बंगले पर पहुँचे, मैडम गुस्से से भरी बैठी थी।

सारी मैडम, नींद लग गयी थी ज़रा। क्या अफज़ल तुम कितना लेट करते हो ? पता है हम आपका कितनी देर से इंतज़ार कर रहे हैं ? मैडम ने नाराज़गी भरे स्वर में कहा।

चलिये मैडम, अफज़ल ने मैडम के हाथ से बैग लेते हुए कहा। तब तक ड्राइवर मानसिंह सरकारी गाड़ी स्टार्ट कर चुका था। मैडम भारी-भरकम साड़ी के साथ गहरी लिपिस्टिक को सँवारते-सँवारते गाड़ी में आ बैठी।

मैडम, अफज़ल ने कहा। हाँ बोलो- मैडम ने कटे बालों पर हाथ फेरते हुए कहा। मैडम, सब साहब लोगों की मैडम से आपका स्वभाव बहुत अच्छा है। सभी स्टाफ के लोगों का भी यही कहना है।

थैक यू अफज़ल। मैडम नज़ाकत भरे अंदाज़ में बोली। अफज़ल जी दोहरे हो गये खुशी के मारे। मॉल में शॉपिंग करते-करते दो घण्टे बीत चुके थे अफज़ल की कलाइयाँ तो क्या, कन्धे तक दर्द करने लगे

थे पैकेट्स और बैग उठाते-उठाते, पर क्या मजाल कि अफज़ल के चेहरे से मधुर मुस्कुराहट गायब हो जाये। मन में हज़ारों गालियाँ देते रहे, पर मुस्कुराते रहे।

मैडम-अफज़ल की मरी-सी आवाज़ निकली।

हाँ अफज़ल, मैडम ने साड़ियों के शो रूम पर नज़र डाली। मैडम आप कहें तो ये पैकेट्स गाड़ी में रखकर आ जाऊँ। अफज़ल ने कंधों के दर्द को पीते हुए कहा। सॉरी अफज़ल-मैडम की नज़र जैसे ही अफज़ल पर गयी, उसे दया आ गयी। जैसे कभी-कभी धोबी को गधे पर आ जाती है। ओऽऽऽ। सॉरी कहकर मैडम ने अपने नाज़ुक हाथों से अफज़ल के कंधे दबाये। अफज़ल हवा में उड़ने लगा। उड़ते-उड़ते ही वह मॉल के बाहर गया और सभी पैकेट्स और सामान सरकारी गाड़ी में रखकर फिर उड़ते-उड़ते वापस आ गया। वापस आने पर देखा कि मैडम मॉल में बनी छोटे से रेस्टोरेंट में बैठी थी और सामने शानदार पिज्जा खा रहा था।

आओ, अफज़ल कॉफी पीते हैं, फिर बाकी की शॉपिंग। लजीज़ पिज्जा के साथ चॉकलेट कॉफी के घूँट भरते-भरते अफज़ल की थकान उतर चुकी थी। साड़ियों के शो रूम में मैडम साड़ियों की खूबसूरती और रंगों में खो गयी और अफज़ल खो गया ऑफिस की कुछ फाइलों में। वो टेण्डर वाली फाइल भी साहब ने अपने कब्जे में रखी है। उस दिन कितना मनाया था ? चाय-नाश्ता और शानदार चिकन कबाब पर, साहब ने नाश्ता हजम कर लिया था, किन्तु फाइलें नहीं निकाली थीं। खैर मैं भी पीछे नहीं हटूँगा। उसे याद है नेपोलियन की बात। असम्भव

शब्द केवल मूर्खों के शब्दकोष में होता है और अफज़ल मूर्ख नहीं। उस फाइल के लिए कुछ भी करेगा। जूते साफ करेगा। क्रॉकरी उठायेगा, जूठी क्रॉकरी तो धो चुका है। कपड़े भी धो देगा, पर फाइल निकलवायेगा। सभी तिकड़म भिड़ाकर उस फाइल को निकलवाना है। पचास-साठ हज़ार रुपये का सवाल है बाबा।

अफज़ल, अफज़ल... तभी मैडम की आवाज़ उसके कानों में पड़ी, तो वह फाइल के सपनों से बाहर आया। देखा तो मैडम उससे कुछ पूछ रही है। जी मैडम, सॉरी मैडम, अफज़ल झेंप गया था। अरे भई, अपनी बेगम के लिए भी कोई साड़ी ले लो। देखो तो सेल भी लगी है पचास प्रतिशत डिस्काउंट है। मैडम ने एहसान जताते कहा। जी मैडम, कह कर अफज़ल सेल की साड़ियों में अपनी बेगम के लिए तलाशने लगा। मैडम फ्रेश साड़ियों के पैकेट लिए काउन्टर पर पहुँच चुकी थी।

ऑफिस में अफज़ल भाई हाथ-पैर धोकर उन फाइलों के पीछे लग चुके थे, क्योंकि पार्टियों से वो एडवॉन्स में मोटी रकम ले चुके थे। एक माह बाद ही अफज़ल भाई रिटायर होने वाले थे। अफज़ल के बाद चमचा कौन? ये काम बड़े साहब ने अफज़ल को सौंप रखा था। अफज़ल के पीछे भी छोटे चमचों की कतार बढ़ने लगी थी। अफज़ल भाई अपनी विरासत किसे सौंप कर जाते हैं, जो अफज़ल के बाद बड़े साहब का खास आदमी बन सके। पॉलिसियों को तोड़ना, नियमों का कचूमर निकालना ये पक्के चमचे का खास काम होता है। यूँ भी सरकारी कानून इतने लचीले होते हैं, जैसा चाहे

तोड़ो-मरोड़ो... और अपनी फाइल निकलवाओ। मजे ही मजे हैं। जैसे अफज़ल खास है, वैसे अफज़ल के भी खास लोग हैं, जो अफज़ल के पीछे लगे हैं कि अफज़ल के रिटायरमेंट के बाद ये विरासत उनको मिल जाये। अफज़ल अपने रिटायर होने के पहले सभी फाइलें निपटाना चाहते थे, जिन पर राशि ली हुई थी। अब भई 'अल्लाह मेहरबान, तो गधा पहलवान। नहीं-नहीं ये कहावत नहीं ये ठीक नहीं 'सैयां भये कोतवाल तो अब डर काहे का' हाँ, ये ठीक है।

बेगम-बेगम क्या हुआ? क्या हुआ? अफज़ल मियाँ अपनी सोती हुई बेगम के नजदीक जा खड़े हुए, तो बेगम की आँखों से आँसू निकल कर गालों पर बह रहे थे। अफज़ल ने बेगम के कंधों को पकड़कर झकझोरा, तो बेगम अचानक उठ बैठी और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।

अरे क्या हुआ? अफज़ल ने पूछा। मैं सपना देख रही थी। सपने में अब तक अपनी जिंदगी कितनी अच्छी गुजरी ये देख रही थी। अब रिटायर होने के बाद कैसे होगा ? ये सोच-सोच कर रोना आ रहा है। बेगम ने अपने दुःख को प्रकट किया, तो क्या हुआ ? अभी तक जो माल जमा किया है, उससे ऐश करेंगे। फिर पेंशन से गुज़ारा करेंगे। अच्छी खासी राशि भी तो मिलेगी। देखते-देखते अफज़ल रिटायर हो गये। लेकिन विरासत में एक बात अपने वारिस चमचे को सिखा गये कि- 'न कानून ना कायदा, जी हुजूरी में फायदा ही फायदा...!'

इन्दु सिन्हा

कार्यालय अधीक्षक, मंडल रेल कार्यालय, रतलाम



चाँद तेरे कितने नखरे

महिलाएँ भी स्वार्थी होती हैं। अपना हित देखती हैं, चन्द्रमा का नहीं। वह भी तो शादीशुदा है। उसकी अर्द्धांगिनी भी तो उसके लिए व्रत रखती है, तभी तो चंद्रदेव को देर हो जाती है। चन्द्रमा का आकार हमेशा घटता-बढ़ता रहता है। इसके लिए उसकी पत्नी को भी करवा चौथ का व्रत रखने का अधिकार है।

चाँद तो चाँद है, शीतलता का प्रतीक। पूरे वर्ष अपनी धवल एवं मन भावन किरणों से मानव मात्र और प्राणियों को तृप्त करता है। मगर उसे भी क्रोध आ जाता है। करवा चौथ को ही लीजिये। हिन्दू महिलाओं के लिए इसका बड़ा महत्त्व है। पतियों की दीर्घ आयु के लिए बेचारी निर्जला व्रत रखती हैं। चाँद देखकर ही इस व्रत को तोड़ने का विधान है।

चंद्रमा की पौ-बारह हो जाती है। बस फिर क्या है? मिल गया, उसे नखरे दिखाने का अवसर। महिला की तो विवशता है। बिना चन्द्रमा के दर्शन किये व्रत नहीं तोड़ सकती। चाहे भले ही पेट में चूहों के स्थान पर बिल्लियाँ उछल-कूद कर रही हों। ये महाशय हैं कि

प्रकट होने का नाम ही नहीं लेते। दर्शनों के लिए तरसा देते हैं।

महिलाएँ भी स्वार्थी होती हैं। अपना हित देखती हैं, चन्द्रमा का नहीं। वह भी तो शादीशुदा है। उसकी अर्द्धांगिनी भी तो उसके लिए व्रत रखती है, तभी तो चंद्रदेव को देर हो जाती है। चन्द्रमा का आकार हमेशा घटता-बढ़ता रहता है। इसके लिए उसकी पत्नी को भी करवा चौथ का व्रत रखने का अधिकार है। घर फूँककर तमाशा तो कोई नहीं देखता।

इसीलिए, अपनी जीवन-संगिनी को समय देने के बाद पृथ्वीवासियों को आशीर्वाद देने के लिए देर से निकलते होंगे। मगर बड़ी अजीब बात है। महिलाएँ

उसका सीधे-सीधे दर्शन करने के बजाय छलनी से देखती हैं। कितना बुरा लगता होगा उसे ?

ईद के त्योहार पर भी वह नखरे दिखाने से बाज़ नहीं आते। पूरे संसार के इमाम, मौलवी चाँद देखने के बाद ही ईद मनाने की घोषणा करते हैं। बड़ी मुश्किल से दिखाई देता है चाँद। मुंबई में दिखाई देगा, तो दिल्ली में हज़ारों लोग उसे देखने को तरस जायेंगे। हल्की सी लकीर देखने को मिल पाती है। तत्पश्चात ईद का त्योहार भाईचारे के रूप में बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। तो है न चाँद की महत्ता सर्वोपरि?

रघुराज सिंह 'कर्मयोगी'

सहायक मंडल यांत्रिक अभियंता, पश्चिम मध्य रेलवे, कोटा

सावधान, तैयारी सिविल सर्विस जारी है।



जैसे पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं वैसे ही अपने राम की हायर सैकेन्ड्री में दो बार फेल होने पर उज्ज्वल भविष्य की तस्वीर साफ हो गयी थी। मैंने गाना शुरू कर दिया था, 'पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा'... इधर शहर के एक थके हुए कॉलेज से बी.ए. पास किया। उधर मैंने घर में डिक्लेयर कर दिया, 'मैं तो आई.ए.एस. बनूँगा।'

पहले कहावत थी कि जिसने सिविल सर्विस पास नहीं की उसका जीवन समझो व्यर्थ हो गया। कहाँ ये टुच्ची-मुच्ची नौकरियाँ। लोग कम्प्यूटर का कितना ही बखान कर लें या फिर डॉक्टर, इंजीनियर बन जायें मगर जो बात सिविल सर्विस में है, आर. ए.एस., पी.सी.एस. में है वह इनमें कहाँ, तभी तो डॉक्टर, इंजीनियर भी सिविल सर्विस की ओर भाग रहे हैं। उन्हें पता है कि सारी उम्र सीमेंट में रेत मिलाते रहें या मरीजों के 'बेफालतू' के टेस्ट कराते रहें तो भी इतना रौब-ढाब और धन न कमा पायेंगे जितना सिविल सर्विस वाले एक पोस्टिंग में पीट लेते हैं। ससुराल में, सोसायटी में दबदबा अलग।

जैसे पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं वैसे ही अपने राम की हायर सैकेन्ड्री में दो बार फेल होने पर उज्ज्वल भविष्य की तस्वीर साफ हो गयी थी। मैंने गाना शुरू कर दिया था, 'पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा'... इधर शहर के एक थके हुए कॉलेज से बी.ए. पास किया। उधर मैंने घर में डिक्लेयर कर दिया, 'मैं तो आई.ए.एस. बनूँगा।' सुनते ही मेरे पिता ने मुझे अपने गले से लगा

लिया, बेटा किसका है? माँ भव विभोर होकर मुझसे लिपट गयी और उन्होंने तुरन्त सवा पाँच रुपये प्रसाद को दिये। भाई-बहन मुझे ऐसे देख रहे थे जैसे मैं दूसरे घर से उतरा हूँ। मैंने एक दर्जन खाली रजिस्ट्रों की फरमाइश करी जो पिताजी अगले दिन ही दफ्तर से उठा लाये। रजिस्ट्रों पर सुंदर कवर चढ़ाए और रंग-बिरंगे पैनों से उन पर सब्जेक्ट, इंडेक्स, पेज नम्बर वगैरह लिखे गये। उधर माता-पिताजी ने दूध वाले से एक लीटर दूध और बढ़ा दिया था, क्योंकि अब दिमाग की कसरत चालू हो रही थी। कुश्ती हो या आई.ए.एस. दूध की खपत कॉमन है। धोबी, दुकानदार, सब्जी वाले, डाकिये आदि सबको ऑफिसियली बता दिया था कि हमारा बेटा रवि आई.ए.एस. दे रहा है, वे ज़रा उसके कपड़ों पर अच्छी इस्त्री किया करें, बेहतर सौदा दें, हरी सब्जियाँ दें, चिट्ठी जरा जल्दी लाया करें, बार-बार कॉल बेल न बजाया करें, बच्चे को डिस्टर्ब होता है, रिश्तेदारी में सभी को लिस्ट बनाकर खबर करा दी गयी थी ताकि कोई छूट न जाए। पिताजी को एक साथ पचास लिफाफे डाक में डालने जाता देख एक दिन मैंने पूछा तो

माताजी ने पुलकित होकर बताया कि अपने दोस्तों को, रिश्तेदारों को और कुछ उन रिश्तेदारों को भी जो अपने आगे हमें कुछ समझते ही न थे और हमारे घर झाँकते भी न थे, को खबर की गयी है कि हमारा लड़का आई.ए.एस. दे रहा है। इसलिए दिल्ली आकर उसका ध्यान न बटाएँ।

मैंने अपने भाई को ताकीब कर दी थी कि आई.ए.एस. का विज्ञापन आने पर मुझे इतिला कर दे, कारण कि एक तो मुझे अपनी राजभाषा से इतना प्रेम है कि अंग्रेजी के अखबार में मैं सिवाय फोटो के अलावा और कुछ देखना-पढ़ना पसन्द नहीं करता हूँ। दूसरे मैं तो तैयारियों में वैसे भी इतना व्यस्त हो जाऊँगा कि मुझे दिन-दुनिया की फिर खबर कहाँ होगी। ऐसा सुना है कि मैच-फिक्सिंग से पहले दिमागी कन्सल्टेशन के लिए क्रिकेटर च्यूइंगम चबाते थे। मैंने भी ट्राई की मगर कोई मज़ा नहीं आया। फिर किसी ने मुझे समझाया, आई.ए.एस. का क्रिकेटरों से क्या मुकाबला? ये सब तो दसवीं फेल या ड्रॉप आउट टाइप होते हैं। बस, मीडिया और मॉडर्न बेवकूफ लड़कियों के चलते ये स्टार बन जाते हैं, उस दिन से मैंने क्रिकेट मैच

देखना भी बंद कर दिया। यद्यपि मुझे पसंद था, जर्दे वाला पान और पान मसाले पर बात ठहरी। मैंने दोनों का खूब सेवन करना शुरू कर दिया। रात-बिरात मैं अपने पिताजी को भी पान लाने भेज देता। मुझे भला फुर्सत कहाँ, जिन्दगी और मौत का सवाल था, मेरी माँ रात में उठ-उठकर मुझे चाय बना के पिलाती। घर में सभी दबे पाँव चलते, धीमी आवाज़ में बातें करते। कुछ सस्ती किस्म की फिल्मी पत्रिकाएँ जिनको पढ़ने पर पिताजी ने कई मेरी तुकाई की थी, अब नियमित आने लगीं थी। उसके दो कारण थे-एक तो आई.ए.एस. वालों का कोई भरोसा नहीं कहाँ से क्या पूछ लें ? दूसरे बेहद पढ़ाई के बाद 'लाइट रीडिंग' भी मस्तिष्क के लिए जरूरी है। ये बात पिताजी अपने ऑफिस में कहीं सुनकर आये थे। अब मेरी फरमाइश की चीज़ें घर पर बनने लगी थीं। माँ पूछती, बेटे आज क्या खाने का मन कर रहा है ? मैंने जी भरकर अपनी मनपसन्द भिन्डी खायी और बाकी घर वालों की नाक में दम कर दिया। घर में दूध, दही, मक्खन, फल, पान-मसाला, बॉर्नवीटा, च्यवनप्राश, बादाम आदि अब सब पर्याप्त रूप से स्टॉक कर दिये गये थे और ताला लगा दिया गया था, जिसकी एक चाबी मेरे पास और एक माताजी के पास थी। माताजी दूध की सारी मलाई मेरे लिए निकाल कर अलग से रख देती थीं, मेरे भाई-बहन टापते रह जाते। थोड़े दिनों में उन्हें आदत हो गयी और किसी के गिलास में अगर गलती से भी मलाई चली जाती तो वह माताजी को 'रिफंड' कर देता। चैन की छन रही थी। कल तक का नाकारा, नालायक, जिसके भविष्य के बारे में पिताजी आश्वस्त थे कि यह जूता पॉलिश करेगा या साइकिल का पंचर लगायेगा, वह वी.आई.पी. हो गया था। साला मैं तो साहब बन गया।

और फिर जिसका डर था वही बात हो गयी। आई.ए.एस. का विज्ञापन निकल गया। मेरा छोटा भाई जिसे मैंने सिर्फ विज्ञापन देखने की ड्यूटी दी थी वह जोश-जोश में फॉर्म भी ले आया। फॉर्म पढ़कर मुझे चक्कर आने लगा। फॉर्म समझ में नहीं आता था। जितना पढ़ता उतना कन्फ्यूज हो जाता। कहने को फॉर्म द्विभाषी था मगर इसकी हिन्दी कौन अंग्रेज़ी से कम थी। कहाँ से लाते हैं ये हिन्दी के शब्द, ये कौन अंग्रेज़ी से कम थी ? ये कौन प्रदेश की भाषा है जी, जो अंग्रेज़ी से भी अधिक कठिन है ?

जब सारे रास्ते बंद हो जाते हैं, तो इंसान ईश्वर की शरण में जाता है। मैंने भी माता-पिता को अपना फैसला सुना दिया कि मैं फॉर्म भरने से पहले माता के दर्शन करना चाहता हूँ। सब गद्गद हो गये। अब किसमें दम है जो मना करे और पाप का भागीदार बने। बस फिर क्या था, हम सब दोस्त यार पिकनिक-कम दर्शन पर निकल पड़े। बड़ा मज़ा आया। माताजी ने हाथ खोलकर पैसे दिये थे। इसके बाद तो जब भी मेरा मन उचटता, मैं कहता 'माता के पास जाना है, माता ने बुलाया है।' बस दूसरे दिन खानगी हो जाती।

जैसे-तैसे फॉर्म भरने के बाद मेरी ऐश का दूसरा फेज चालू हुआ। मैंने दिखाने को अब तो एक पुरानी जनरल



नॉलेज की किताब भी खरीद ली थी। बाकी विषयों के लिए मैंने कह दिया था कि आई.ए.एस. की किताबें कोई खेल-खिलौना या मखौल नहीं होती हैं। अव्वल तो मिलती ही नहीं हैं, मिलती हैं तो बहुत महँगी। अतः मैं उन्हें लाइब्रेरी में जाकर ही पढ़ूँगा। माता-पिता फिर निहाल हो गये कि मुझे उनका और उनके खर्चें का कितना खयाल है। सबको बताते फिरते कि रवि जी लाइब्रेरी गये हैं। कलेक्टर साब के इज्जत से बुलाना चाहिए। फिर अगर घर वाले ही इज्जत नहीं करेंगे तो बाहर वाले क्या खाक करेंगे। रोज शाम को मित्र लोगों की टोली निकल पड़ती। कभी फिल्म, कभी मटरगश्ती, कभी इश्क। बड़ा मज़ा आ रहा था। मैं सोचता था जिस सर्विस की तैयारी मैं इतना मज़ा है, सर्विस मिलने के बाद क्या होगा ? हमारे घर पहले ही कोई आता-जाता न था, अब तो खबर और करा दी गयी थी। साथ ही माता-पिता जब भी पास-पड़ोस या किसी समारोह में जाते तो कोई मेरे लिए पूछता या न पूछता वे सबको सुनाते हुए यह कहना नहीं भूलते, 'जल्दी जाना है, रवि जी को आई.ए.एस. की तैयारी करता छोड़ आये हैं। रवि जी तो लाइब्रेरी गये हैं आई.ए.एस. के सिलसिले में।

हमारा एक दोस्त मेरठ में रहता था, उसका वहाँ फार्म हाऊस था। उसने बताया कि वहाँ ऐशो-आराम की सभी सुविधाएँ हैं। बस मैंने घर वालों से कह दिया कि मैं मेरठ सेन्टर से फॉर्म भरूँगा, कारण कि सरकार ने डिसाइड किया है कि मेरठ से आई.ए.एस. बहुत कम है। इसलिए अबकी बार मेरठ सेन्टर से लोगों को ज्यादा से ज्यादा लेना है। मेरे माता-पिता तो सुनकर खुशी से पागल हो गये और उन्होंने अपने एक परिचित के यहाँ मेरठ में मेरा इंतजाम करा दिया। वह परिचित बड़े धार्मिक और वेजिटेरियन थे। मेरा मन मुर्गा खाने को कर रहा था। मैंने तुरंत माता-पिता को दिल्ली फोन लगाया और उनकी शिकायत कर दी जैसे वेजिटेरियन न हो कोई कच्चा-बनियान गिरोह वाले हों। सुनते ही मेरे बड़े भाई दिल्ली से स्कूटर पर पका-पकाया मुर्गा मुझे मेरठ देने आये। वे नहीं चाहते थे कि इम्तहान से ठीक पहले मेरा मन चिकन जैसी टुच्ची चीज के चलते विचलित हो जाये। कुछ वो ये भी नहीं चाहते थे कि मैं कैसे भी अपने फेल होने का इल्जाम उनके या मुर्गे के सिर लगा पाऊँ। इतना बड़ा इल्जाम लेकर वे नरक में न जाना चाहते थे। एक बार क्लर्की के इम्तहान में अपने फेल होने का इल्जाम मैं बिजली पर लगा आया था और साफ बच निकला था। क्या करता,

बिजली नहीं थी। बिजली नहीं तो लिफ्ट नहीं चल रही थी। लिफ्ट नहीं चल रही थी तो मैं टाइपराइटर सीढ़ियों से उठाये-उठाये सैकेन्ड फ्लोर पर ले गया। बस बाँह जाम हो गई। हाथ अकड़ गये। उँगलियाँ सुन्न पड़ गयीं। टाइप कर ही नहीं पाया और मैं क्या, कोई भी नहीं कर पाया।

राम-राम करके इम्तहान का दिन भी आ गया। सुबह-सुबह फ्रेश होकर मैं स्कूटर पर इम्तहान देने निकला। स्कूटर मैंने बड़े भैया से जब मुर्गा देने आये थे, झटक लिया था। मन बिल्कुल शांत और साफ था, कोई तैयारी नहीं थी। कुछ याद न था जिसे भूलने की टेंशन होती। प्रीलीमिनरी इम्तहान की एक और विशेषता है, न तो वे प्रश्न पत्र आपको देते हैं ताकि कोई बाद में आपसे पूछकर 'क्रॉस चैक' कर पाये। दूसरे, सारे सवाल ऑब्जेक्टिव टाइप होते हैं। बस, राइट का निशान लगाते जाओ। दिमाग पर कोई जोर नहीं पड़ता। दरअसल सवाल पढ़ने की जहमत किये बिना ही मैं राइट का निशान जहाँ-तहाँ लगाकर निकल आया। सवाल पढ़कर ही कौन-सा तीर मार लेना था। अपना रिजल्ट तो बखूबी मालूम था। फिर भी माता-पिता को घर जाकर मैंने 'मैं कैसे मरते-मरते बचा...' की कहानी पूरे इफेक्ट के साथ सुनाई। 'मैं सेन्टर पर जा रहा था। स्कूटर मैं बहुत ठीक-ठीक और धीरे-धीरे चला रहा था कि अचानक एक बुढ़िया सड़क के बीचों-बीच न जाने कहाँ से आकर खड़ी हो गयी। लाख बचाते-बचाते भी मेरे स्कूटर से टकरा गयी। मैं गिर गया। बुढ़िया गायब हो गयी। अब तुम्हीं बताओ मम्मी, ऐसी मनोदशा में मैं कितना नर्वस हो गया। इम्तहान क्या खाक देता, फिर भी दे तो आया हूँ। पर्चा अच्छा हुआ है। देखिये क्या होता है ? रिजल्ट तो साल के आखिर में आयेगा लेकिन 'मेन' की तैयारी अभी से करनी है। माताजी मेरी कहानी सुनकर रूआँसी हो उठीं और उन्होंने मुझे गोद में छुपा लिया। उस बुढ़िया को हजार-हजार बार कोसते हुए वे मेरे लिए हल्दी मिला दूध लेने चली गयीं। मुझे यह डर था कि कोई यह न टोक दे भैया 'नॉलज' क्या डोलची में दूध की तरह ले जा रहे थे, जो बुढ़िया के टकराने से सड़क पर फैल गयी। मगर हमारी कहानी के आगे बड़े-बड़े भूतनाथ फेल हैं। मैं सोचता हूँ अगली बार इल्जाम किस पर डालूँ। बिजली... बुढ़िया...बारिश...बॉलीबुड...अभी तो जेड तक बाकी है।



खलनायक भेद

मैंने सुना है, कुछ खलनायक निजी ज़िंदगी में नायक से ज्यादा अच्छे होते हैं, दान-पुण्य करते हैं, पर्दे पर जी हुई ज़िंदगी उन्हें भला बनने पर मजबूर कर देती है। बेचारे क्या करें, एक साथ दोनों जगह बुरे थोड़े ही बन सकते हैं। भई खलनायक, तुम्हारा कल्याण हो! तुम्हारी आत्मा को शान्ति मिले!

हमारी फिल्मों में नायकों की ही तरह कई तरह के खलनायक (विलेन) पाये जाते हैं। कुछ खास-खास खलनायकों की नस्लें इस प्रकार हैं-

खानदानी खलनायक

एक होता है खानदानी खलनायक। खानदानी खलनायक यानी जिस फिल्म में पूरा खानदान ही खलनायकों से भरा पड़ा हो। बाप भी खलनायक, बेटा भी खलनायक, उनके नौकर-चमचे सब खलनायक। बाप मुजरा देखे, तो बेटे को ऐतराज नहीं और बेटा बलात्कार कर ले, तो बाप को शिकायत नहीं। न आँख की शर्म न लाज-लिहाज़। खानदानी खलनायक के परिवार की एकता टच वुड देखते ही बनती है। एक साथ जीते हैं और एक साथ लड़ते हैं और अंत में जब खानदानी खलनायक जेल या परलोक जाता है, तो सपरिवार जाता है। मजाल है कि कोई पीछे छूट जाये।

नायिका को पाने का इच्छुक खलनायक

एक खलनायक होता है, जो किसी भी तरह से बाइ हक एण्ड कुक नायिका को पाना चाहता है। उसका पीछा करता है, चालें चलता है। वही सब कुछ करता है, जो नायक करता है। सिर्फ गाना नहीं गाता। क्या सिर्फ इसलिए उसे खलनायक कहना उसके साथ अन्याय नहीं होगा? और वैसे भी 'एवरी थिंग इज फेयर इन लव एण्ड वॉर'- प्रेम और युद्ध में सब जायज़ है, वाले सिद्धांत को देखें, तो वह नैतिक रूप से बिल्कुल दोषी नहीं है। लोकतंत्र में सबको प्रेम करने का और जिससे प्रेम किया है, उसको पाने का बराबर का हक है। चाहे वह नायक हो, चाहे खलनायक। अब समय आ गया है, ऐसे खलनायक को, खलनायक कहना चाहिये या नहीं? इस सवाल के

जवाब के लिए एक समिति बनाई जानी चाहिये। एक आयोग बिठाया जाना चाहिये, ताकि इस नस्ल के खलनायक के साथ न्याय किया जा सके, कम-से-कम उसका नाम बदलकर रोमांटिक खलनायक तो कर ही देना चाहिये।

नायक-नायिका के मिलन का विरोधी खलनायक

फिल्मों में एक खलनायक ऐसा भी होता है, जो अपनी पूरी ऊर्जा इस बात में लगाये रहता है कि नायक को नायिका नहीं मिलनी चाहिये। इसमें उसका अपना कोई नफा या नुकसान नहीं होता। ऐसे निःस्वार्थ और ऐसे परोपकारी खलनायक हमारे समाज में थोक में पाये जाते हैं। कहीं कोई सुखी न हो जाये, कहीं कोई तरक्की न कर जाये, कहीं दो चाहने वालों का मिलन न हो जाये, इसमें अपना निःस्वार्थ सहयोग देने के लिए वे हमेशा तैयार मिलते हैं। हमारे देश में शिष्टमंडल बहुतेरे हैं। कोई शिष्टमंडल जाये और इस नस्ल के खलनायक से पूछे कि हे परोपकारी खलनायक! तू अपने काम का हर्जा करके दूसरे का बनता काम बिगाड़ता है। इससे तुझको मिलता क्या है? तू इतना सेडिस्ट क्यों है? कोई हँसता-खेलता, नाचता-गाता तुझे अच्छा क्यों नहीं लगता? यह तेरी ड्यूटी है या हॉबी है?

सर्व दुर्गुण सम्पन्न खलनायक

हमारी फिल्मों का हर नायक सर्वगुण सम्पन्न होता है, लेकिन सर्व दुर्गुण सम्पन्न खलनायक किसी-किसी फिल्म में पाया जाता है। क्या-क्या नहीं करता वह? स्मगलिंग वह करता है, खुफिया नक्शे और देश का राज दुश्मन देशों को वह बेचता है, हेरोइन और कोकीन का

व्यापार वह करता है, कामी वह, वेधी वह, बलात्कार स्पेशलिस्ट वह। कोई उससे भी पूछे कि हे सर्व दुर्गुण सम्पन्न खलनायक! नायक के हाथों मारे जाने के लिए एक ही दुर्गुण काफी होता है। एक जान देने के लिए इतने सारे झंझट क्यों पाल रखे हैं? शायद मल्टीस्टार कास्ट को बैलेंस करने के लिए ऐसा किया जाता है। फिल्म के नायक में जितने गुण, खलनायक में उतने ही दुर्गुण। हालांकि, जो जितना बड़ा खलनायक होता है, वह उतनी ही बुरी मौत मरता है। मगर जीते जी वह इतने मजे लूट चुका होता है, जितने नायक को पूरी फिल्म में भी नसीब नहीं होते।

नेता खलनायक

फिल्मों को बनते हुए सौ साल पूरे हो गये हैं, लेकिन फिल्मों में नेता खलनायक को आये हुए मुश्किल से कुछ साल हुए हैं। उसे अभी बहुत कुछ सीखना है। अभी फिल्मों में उसका शौशव काल चल रहा है। खलनायक के असली कद तक पहुँचने में इस नेता खलनायक को अभी टाइम लगेगा। नेता खलनायक की शुरुआत कोई बहुत आशाजनक नहीं रही है। वह परम्परागत खलनायक की नकल करता हुआ-सा लगता है। गरीबों की झोपड़-पट्टी जलवाता है, नाच-गाना देखता है। उसे हवाला की एबीसीडी नहीं आती, वह करोड़ों के घोटालों से बिल्कुल अपरिचित है। उसे यहाँ तक पहुँचने के लिए एक लम्बी दूरी तय करनी है, जिसके लिए जरूरत है, लगन, मेहनत और खाने-पीने-चरने की प्रैक्टिस की। नेता खलनायक को हमारे नेताओं से कुछ सीखना चाहिये।

नायक जैसा खलनायक

नायक जैसा खलनायक, नायक और खलनायक की क्रॉस-ब्रीड होता है। यह अक्सर कई सीनों में नायक पर भारी पड़ता है, पर्दे पर आते ही तालियाँ बजवा लेता है। ऐसे खलनायक का रोल करने वाले कलाकारों को आगे चलकर नायक के लिए प्रमोट भी किया गया है, जैसे विनोद खन्ना और शत्रुघ्न सिन्हा। इसे आप साइड नायक नहीं कह सकते। साइड नायक कहना, इसका अपमान है और ना ही इसे चौबीस कैरेट खलनायक कह सकते हैं, क्योंकि इसके पर्दे पर अवतरित होते ही पब्लिक तालियाँ जो बजाती है, फिर आगे चलकर इस 'नायक जैसे खलनायक' ने तरक्की करके 'एन्टी नायक' का रूप धर लिया। इस रूप में यह बहुत खुश है, क्योंकि अब यह नाच सकता है, गा सकता है, नायक की तरह सम्मान पा सकता है, सारे बुरे काम करने के बावजूद।

कॉमेडियन खलनायक

नायक जैसे खलनायक से भी ज्यादा, दर्शकों ने अगर किसी को पसंद किया है तो वह है, 'कॉमेडियन खलनायक'। 'टू इन वन अंदाज 'कॉमेडियन' का, काम 'खलनायक' का। खलनायक के प्रति जो नफरत होती थी, उस नफरत को 'कॉमेडियन खलनायक' ने लोगों के दिल से निकाल दिया। यह नायिका को भले ही रुलाता है, लेकिन दर्शकों को हँसाता है। 'कॉमेडियन खलनायक' की थोक में शुरुआत हुई, कादर खान और शक्ति कपूर के आने से। इनके आने से रूखे-सूखे खलनायकों की डिमान्ड खत्म हो गई और रणजीत जैसे कई खलनायक पर्दे के पीछे खदेड़ दिये गये। लेकिन क्या यह खलनायक की जीत है? नहीं, यह जीत है कॉमेडी की, यह जीत है हास्य की, हास्य मेव जयते!

खलनायक का पैसा प्रेम

खलनायक का 'पैसा-प्रेम' जगजाहिर है। हमेशा हाथ पैसा-हाथ पैसा करता ही रहता है और क्यों न करे? हम सभी तो करते हैं। यह अर्थ प्रधान युग जो है। पैसे का जमाना है, तो क्या इसका मतलब यह हुआ कि हम सब खलनायक हैं। इस पर भी विचार करना चाहिये। आप कोई भी फिल्म देख लें। गरीब नायक मिल जायेगा, गरीब नायिका मिल जायेगी, लेकिन किसी फिल्म में गरीब खलनायक नहीं मिलेगा। गरीब क्या खाकर खलनायक बनेगा? मतलब यह कि खलनायक



★ आश करण अटल

हिन्दी काव्य एवं साहित्य
जगत के जाने-माने हस्ताक्षर श्री
आश करण अटल जी का यह
रोचक स्तम्भ हमने पिछले कुछ
अंकों से शुरू किया है, जिसके
अंतर्गत उन्होंने भारतीय सिनेमा
जगत पर व्यंग्य-विनोद भरी
चुटकियों की शानदार बानगी पेश
की है। आपके पत्रों से पता चला
है कि आपको हमारी यह अनूठी
पहल काफी पसंद आयी है।
इसीलिए इसे जारी रखते हुए इस
बार हम इसकी अगली कड़ी पेश
कर रहे हैं। देश-विदेश के 2000
से अधिक काव्य-पाठी दौरे कर
चुके श्री अटल जी के व्यक्तित्व
का एक और शानदार पहलू इस
स्तम्भ के जरिये हम देख पायेंगे।

प्रधान सम्पादक

हमेशा पैसे वाला होता है। फिर वह, और पैसों के लिए लोगों की जान लेता है और अन्त में और अधिक पैसों के लिए अपनी जान दे भी देता है। यहाँ खलनायक हमें नायक

से भी बड़ा संदेश दे जाता है। नायक तो नायिका को पाकर हमें मोह-माया में पड़ने का संदेश देता है, जबकि खलनायक हमें शिक्षा देता है कि पैसे का लोभ बहुत बुरी चीज होती है। पैसे से प्यार कभी मत करना। जय हो खलनायक महाराज!

सिद्धांतहीन खलनायक

वैसे तो किसी खलनायक का कोई सिद्धांत या चरित्र होता ही नहीं है, फिर भी पहले के खलनायक के मुकाबले आज के खलनायक के चरित्र में काफी गिरावट आई है। गिरावट तो जीवन के कौन से क्षेत्र में नहीं आई है? लेकिन खलनायक, जो पहले से ही गिरा हुआ होता है, उसमें गिरावट आना चिन्ता का विषय है। पहले के खलनायक में धैर्य होता था। वह अपने चाचा की जायदाद पाने के लिए उनके मरने का इन्तज़ार कर लेता था। जबकि आज के खलनायक में जरा भी सब्र नहीं। वह अपने चाचा का टेंटुआ दबा देता है। पहले के खलनायकों के घर-परिवार होते थे, बाल-बच्चे होते थे, तो थोड़ा-बहुत उनके सुधरने की गुंजाइश रहती थी। वे सुधर भी जाते थे, लेकिन आज का खलनायक, पता नहीं कहाँ से आता है, क्यों आता है, और कहाँ चला जाता है, एकदम आधारहीन, सिद्धांतहीन और दिशाहीन। खलनायक भइया, जरा ज़मीन से जुड़ो, अपने भविष्य के बारे में सोचो!

खलनायक की पीड़ा

कलाकार, कलाकार होता है, चाहे वह नायक का रोल करे या खलनायक का। मगर बात ऐसी नहीं है। खलनायक हमारे ऑडियन्स की अज्ञानता का हमेशा शिकार रहा है। उसे नायक जैसा सम्मान नहीं मिलता। बच्चे उससे डर के दूर भागते हैं, और तो और वह अपने बच्चों के साथ बैठ कर अपनी फिल्म नहीं देख सकता। पर्दे पर ही सही, कोई अपने बीवी-बच्चों के सामने, अपनी पिटाई होते हुए थोड़े ही देख सकता है। उसके पास रुपया-पैसा होता है, शोहरत होती है, मगर अज्ञानी जनता की इज़्जत नहीं मिलती। मैंने सुना है, कुछ खलनायक निजी ज़िंदगी में नायक से ज्यादा अच्छे होते हैं, दान-पुण्य करते हैं, पर्दे पर जी हुई ज़िंदगी उन्हें भला बनने पर मजबूर कर देती है। बेचारे क्या करें, एक साथ दोनों जगह बुरे थोड़े ही बन सकते हैं। भई खलनायक, तुम्हारा कल्याण हो! तुम्हारी आत्मा को शान्ति मिले!

क्रमशः... अगले अंक में जारी

3		7			5		8
2				3			7
4		9	5	7	8	1	2
	4			6			5
				8			
8			2		5		4
7		4			6		1
	8		7	2	1		4

सूडोकू

कैसे खेलें:-

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है।
- आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3X3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
- पहेली का केवल एक ही हल है।

2				5			7
			1		8		
		6		7		3	
	3						2
4		2		9		1	8
	9						4
		8		1		6	
			9		6		
5				8			4